"माया से मोक्ष तक" - एक आधुनिक व्याख्या

जिज्ञासु – माया क्या है ?

विज्ञानी – जैसा कि हम जानते हैं, कि (मा = नहीं, या = जो) अर्थात् जो वास्तव में है नहीं, मात्र भ्रम है उसे माया कहते हैं। भ्रम के कुछ सर्व परिचित उदाहरण निम्न प्रकार से हैं – 1. अँधेरे में पड़ी रस्सी को साँप समझ लेना 2. रेगिस्तान में गर्मी के दिनों में सूर्य की किरणों के परावर्तन के कारण सुदूर पर जल का भ्रम पैदा होना 3. सतत भ्रमण करती पृथ्वी का स्थिर लगना 4. ट्रेन पर यात्रा करते समय पेड़ों का भागते हुए लगना 5. पानी में आधी डूबी लकड़ी का टेढ़ी नज़र आना 6. Electron का हेत व्यवहार आदि।

जिज्ञासु – कौतूहल से भरा प्रश्न यह उठता है, कि क्या यह सम्पूर्ण जगत सत्य है, अथवा हमारी ज्ञानेन्द्रियों में नित्य उपजता भ्रम ?

विज्ञानी – पाठकगण कृपया "प्राण" विषय पर लिखे लेख पर ध्यान दें, जिसमे मन की रचना का ज्ञान ठीक से हो जाता है। मन कोई ठोस वस्तु नहीं है। विचारों के निरन्तर चलने वाले प्रवाह को ही मन के नाम से जाना जाता है। यह पहले ही बतलाया जा चुका है, कि सुषुम्ना में इड़ा–पिंगला के भीतर मेरुपुच्छ से लेकर सहस्रार तक के पथ में चुम्बकीय विद्युत तरंगों का एक निश्चित frequency पर स्पन्दन होना 'मन' कहलाता है। इसे संस्कृत में 'उदान' शब्द से जाना जाता है। *(इड़ा एवम् पिंगला को विज्ञान के शब्दों में मोटर (Motor) और Sensory Nerves के नाम से कह सकते हैं जो Sympathetic Nervous System के भाग हैं। ये दोनों नाड़ियाँ मेरुदण्ड में स्थित हैं तथा शरीर में घटित होने वाली हर घटना, यहाँ तक कि मन का सोचना तक एकत्रित करके Autonomic Nervous System के हवाले कर देती हैं, यह Auto Nervous System (A.N.S.) हर घटना को एक विशिष्ट भाषा में हर जीन (Gene) पर Record कर देता है।)*

मान लीजिए कि एक विशिष्ट समय पर चुम्बकीय विद्युत तरंगों का स्पन्दन 30 kilo hertz का है, तो एक खास प्रकार के विचारों का जन्म होगा। यदि वह स्पन्दन 30.2 kilo hertz का हो जाये, तो विचारों के गुण एवम् प्रकृति बदल जाएगी। यही कारण है, कि हर व्यक्ति के गुण कर्म स्वभाव अलग अलग होते हैं। और एक ही व्यक्ति के गुण कर्म व स्वभाव अलग अलग समय पर बदलते भी रहते हैं। कभी वह कामी, कभी क्रोधी और कभी लोभी आदि प्रवृत्तियों से व्यवहार करता दिखलाई पड़ता है। यह मात्र frequency के परिवर्तन से होता रहता है। इन fequencies में दवाओं खासकर होम्यो दवाओं द्वारा मन चाहा परिवर्तन भी लाया जा सकता है।

चुम्बकीय विद्युत तरंगों के सतत् बहाव को बनाए रखने के लिए आवश्यक है, कि वहाँ पर अणु रचना के सिद्धान्त के आधार पर ही हर कोष्ठ (cell) में Nutron एवम् Proton भी उपस्थित हों एवम् कपाल (cortex) में Nutron के साथ Proton भी सघनता से मौजूद हों, तभी इस प्रकार का सतत चक्र बना रह सकता है। इन्हीं स्पन्दनों का परिणाम है, कि हमें इस दृश्य जगत का अनुभव होता रहता है। स्वप्न भी इन्ही स्पन्दनों के कारण आते हैं और तरह तरह से दुख एवम् सुख की स्मृतियाँ चित्त पटल पर छपती रहती हैं। चूँकि विद्युत कणों (Electrons) की गति अति तीव्र होती है, इसीलिए इसकी चंचलता को बन्दर की चंचलता से तुलना की गई है, ताकि आम आदमी जो पहले कभी विद्युत को जानता भी न था इसका कुछ अनुमान लगा सके। विराट पुरुष ब्रह्म का अवतारी स्वरूप "राम" के मन को हनुमान कहा गया है। सिद्धान्त है – "यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे"। चंचल वह भी है, आखिर हैं तो वानर ही। परन्तु उनका पूरा जीवन राम को समर्पित है, अतएव वे वन्दनीय हैं और उनकी उपासना करने से हमारा मन भी राम तक पहुँच सकता है। यह प्रतीकों की भाषा है। इसे ठीक से समझने से ही हम ग्रंथों को ठीक से जान सकते हैं।

जिज्ञासु – बुद्धि क्या है ?

विज्ञानी – पिछले **"प्राण"** के लेख से जानकारी लेते हुए, यह स्पष्ट हो जाता है, कि बुद्धि भी "मन" का ही उच्चतर frequencies पर होने वाला स्पन्दन मात्र है। इस उच्चतर frequency पर होने वाले स्पन्दन को भ्रू–मध्य पर अनुभव किया जा सकता है। भ्रूमध्य पर योग शास्त्र में आज्ञा चक्र का स्थान बतलाया गया है। जब विद्युत कणों का स्पन्दन मान लीजिए 300 kilo hertz का हो रहा हो, तो उस समय हम गम्भीर चिन्तन की मनः अवस्था में पहुँच जाते हैं और तब करते हैं 'संकल्प' अथवा 'निर्णय'। मन एवम् बुद्धि दोनों के द्वारा हम इस बाह्य जगत को अनुभव करते हैं और हमें यह जगत पूर्ण रूप से सत्य लगता है। वास्तव में जब तक मन एवम् बुद्धि क्रियाशील रहते हैं, तब तक जगत का सारा का सारा अनुभव सत्य ही लगता है।

जिज्ञासु – चित्त क्या है ?

विज्ञानी – आइए, इसी श्रृंखला में **'चित्त'** को भी समझ लें। मानव शरीर में करोड़ों जीन्स हैं और उन सभी जीन्स (Genes) पर विद्युत स्पन्दनों द्वारा सम्पूर्ण सूचनाऐं जो भी जीवन में घटती हैं, नित्य प्रति हर क्षण Record होती रहती हैं। लगता है,

कि यह कार्य हर जीन पर बड़ी कुशलता से खास कोड (code) की भाषा में लिख दिया जाता है। हर जीन का निर्माण विशेष Protein से होता है। सम्भव है, कि जीन पर लिखने के लिए बुद्धि को निर्माण करने वाली विद्युत तरंग से भी अति उच्च स्तर की, मान लो 3000 kilo hertz की तरंग द्वारा यह लेख लिखा जाता हो। लगता है, कि यह कार्य Autonomic Nervous System द्वारा सम्पादित किया जाता है। यदि एक चावल के दाने पर पूरी भगवत गीता मानव द्वारा लिखी जा सकती है, तो जीवन भर की सारी घटनायें ईश्वर द्वारा जीन पर क्यों नहीं लिखी जा सकती ? *(Autonomic Nervous System को Para Sympathetic Nervous System भी कहते हैं। यह हृदय की गति, भोजन संस्थान एवम् अंतरंग अंगों की क्रियाओं को संचालित करता है।)* जीन पर Record की गयी सूचनाऐं मनुष्य में एक विशेष प्रवृत्ति (Tendency) को जन्म देती हैं और यही उस व्यक्ति का स्वभाव बन जाता है। इन्हें संस्कार कहा जाता है। ये संस्कार पूर्व जन्म से भी आते हैं और इस जन्म से भी जुड़ते हैं। मृत्यु के समय ये सारी सूचनाऐं एक कैप्सूल (Capsule) की शक्ल का चुम्बकीय विद्युत तरंगों (Electromagnetic Waves) का रूप ग्रहण करता है और तब एक नीलिमा युक्त सघन बादल Proton का चुम्बक क्षेत्र (magnetic field) तैयार हो जाता है जिसमें यह कैप्सूल सन्निहित होकर आकाश में तैर जाता है। Nutron की उपस्थिति के कारण ही सम्पूर्ण शरीर में एक प्रकाशमय लिंग शरीर बनता है, जिसे प्रेत शरीर अथवा सूक्ष्म शरीर भी कहते हैं।

अनन्तर में इसी को जीवात्मा कहा जाता है अथवा कारण शरीर भी, जो भावी जन्मों का कारण बनता है। वास्तव में चित्त (Proton) ही जन्म लेता है और (Proton) ही मरता है। जीन पर लिखित सूचनाओं अथवा संस्कारों के आधार पर Proton ही उसी प्रकार का शरीर का निर्माण वायुमण्डल में निहित पृथ्वी (Solids), जल (liquids), वायु (gases), अग्नि (Heat) एवम् आकाश (Space) से निर्मित कर लेता है। यदि मानव जीवन में अर्जित सूचनायें (Tendencies) अधिक निकृष्ट प्रकार की हैं, तो निकृष्ट योनि – जैसे पेड़ पौधों से लेकर पशु–पक्षी तक एवम् चींटी से लेकर हाथी तक की योनि भी Proton स्वयं निर्मित कर लेता है। मानव योनि में भी रोगी अथवा बलिष्ठ, राजा अथवा रंक, ब्राह्मण अथवा शूद्र आदि परिवारों में जन्म भी इन्हीं एकत्रित सूचनाओं के आधार पर होता हुआ लगता है, ऐसा शास्त्रों का मत है। ये सारा कुछ कार्य उच्च कोटि के Computerised क्रियाशीलता से होता हुआ लगता है। अब यह बात स्पष्ट होती जा रही है, कि व्यक्ति विशेष का जीन लेकर उस व्यक्ति का एक और प्रतिरूप (clone) बनाया जा सकता है और यह जीन पर खुदी सूचनाओं के कारण ही सम्भव होता है, क्योंकि आत्मा (Soul) की शक्ति तो सतत सर्वत्र प्रवाहमान है। इस प्रकार सूचनाओं (संस्कारों) के कारण चित्त हमारे जीवन को पूरी तरह से शासित करता है, इसीलिए पुत्र को लगभग अपना प्रतिरूप (clone) जैसा अर्थात् आत्मज कहा गया है।

Genetic Engineering अर्थात् जीन्स को बदल देने से भी हमारे मन, बुद्धि एवम् चित्त में परिवर्तन कर सकना विज्ञान द्वारा सम्भव हो गया है। कुछ औषधियों, विशेषकर होम्यो दवाओं द्वारा जो इतनी ही उच्च स्तर की उच्च तरंगों से निर्मित हों, तो मन, बुद्धि एवम् चित्त को प्रभावित कर सकना एवम् इन तीनों के गुण, क्रिया अथवा स्वभाव में परिवर्तन किया जाना सम्भव है।

वास्तव में, अभी ऐसा कोई उपकरण नहीं बना है, जो मन, बुद्धि एवम् चित्त की तरंगों के स्पन्दनों को नाप कर बतला सके और उपर्युक्त तथ्यों को सीधा–सीधा प्रमाणित कर सके। फिर भी होम्यो दवाओं का प्रभाव मन, बुद्धि एवम् चित्त को बदल देता है। यही कारण है कि होम्यो दवायें मन की अनेक बीमारियों को ठीक करने में सक्षम हैं। यह सत्य है और इसी कारण होम्यो दवाऐं वंशानुगत व्याधियों को सफलता पूर्वक ठीक कर देती हैं।

जिज्ञासु – अहंकार क्या है ?

विज्ञानी – परमात्मा अथवा ब्रह्म की सत्ता से सृष्टि निर्माण हेतु प्रथम शक्ति बीज (Nutron) की उत्पत्ति होती है, जिससे आगे निर्मित होता है Proton और फिर बनता है Electron. यह Nutron शिव (शव+इव अर्थात् मृत जैसा) अवस्था में रहकर भी सम्पूर्ण सृष्टि का आधार बना रहता है। इसे वेद की भाषा में अहंकार (अहम्+आकार) अर्थात् मेरा आकार का नाम दिया गया है। यह अपने निःसंग गुण के होते हुए भी मात्र अपनी उपस्थिति से शरीरों में जीवनी शक्ति का कारण बना रहता है। किसी भी विद्युत चक्र में गर्म (Positive), ठंडी (Negative) एवम् Neutral तीनों तारों की उपस्थिति से ही पूरी तरह से प्रकाश, ताप व ध्वनि के उपकरण सुचारु रूप से कार्य करते हैं। यह शक्ति के उच्चतम स्पन्दन, मान लो तीन लाख किलो हर्ट्ज़ की शक्ति वाला है और शरीरों में हर कोष्ठक (cell) के अतिरिक्त सहस्रार के शिखर पर विशेष रूप से सघनता से स्थित रहता है, जिसे कैलाश शिखर की संज्ञा भी दी गयी है। इस सघन बादलनुमा Nutron की स्थिति ब्रह्म रंध्र पर मानी गयी है।

जिज्ञासु – मोक्ष क्या है ?

विज्ञानी – उपर्युक्त विस्तृत रचना को समझने के उपरान्त यह स्पष्ट हो जाता है, कि **यदि मानव को जन्म एवम् मरण से छुटकारा पाना है, तो उसके चित्त में अनवरत Record होने वाली सूचनाऐं समाप्त होनी ही चाहिए, अर्थात् व्यक्ति को**

स्थितप्रज्ञ बनना होगा । स्थितप्रज्ञ का अर्थ है कि व्यक्ति खुशी की घटना में न हर्षित हो और न दुख के समय उदास (गीता 5/20 तथा 5/3) । **ध्यान, निष्काम कर्म अथवा यज्ञ भावना द्वारा चित्त पटल पर सूचनाओं (संस्कारों) को Record होने से पूर्णरूप से मुक्त रखना होगा** । जब ऐसा हो जायेगा, तो चित्त (Proton) के जन्म लेने का कारण ही समाप्त हो जायेगा । चित्त की शून्य दशा प्राप्त होने पर मन पूर्ण रूप से शान्त हो जाता है अर्थात् Electrons का प्रवाह रुक जाता है । Electrons के रुक जाने से ये कण मेरुपुच्छ से लेकर सहस्रार (Cortex) तक एक रेखा में रेखांकित हो जाते हैं, ऐसा होने पर पहले समाधी लगती है और आत्मानुभूति होती है तब सुषुम्ना में LASER का निर्माण हो जाता है और फिर होता है महान शक्ति का विस्फोट । यह शक्ति तब शिव (Nutron) को भेदन करती हुई Nutron में प्रवेश कर जाती है और तभी Proton भी Nutron (शिव) में प्रवेश कर जाता है । इस क्रिया को शास्त्रों में शक्ति का शिव से मिलन अथवा कुंडलनी जागरण नामों से कहा गया है । ऐसा होते ही वह व्यक्तिनिष्ठ सघन Nutron का बादल मुख्य धारा में अर्थात् परब्रह्म में लीन हो जाता है । यह प्रक्रिया उसी प्रकार से होती है जैसे कि हम विज्ञान में Carbon एवम् Nitrogen Cycles के बारे में पढ़ते हैं । पर यह कार्य है बहुत कठिन । **कदाचित् कुछ योगियों के प्राण ब्रह्म रन्ध्र के मार्ग से निकलते सुने गये हैं, ऐसे ही योगी मोक्ष मार्ग का गमन करते हैं और तब इस प्रकार वह जीव आवागमन के चक्र से सदा सदा के लिए छूट जाताहै । इस प्रकार जीव का माया के चक्र से अथवा सम्पूर्ण भ्रमों से छुटकारा हो जाता है ।**

इसी बात को रामचरितमानस में प्रतीकात्मक भाषा में इस प्रकार बतालाया गया है – कामदेव जब शंकर जी की समाधी तोड़ने में असफल रहा, तब उसने एक पेड़ की शाखा पर बैठकर एकाग्र मन से पुष्प के धनुष पर पाँच बाण सन्धान किए जो शंकर जी के ठीक हृदय पर लगे और शंकर जी की समाधी छूट गयी । तब उन्होंने तीसरा नेत्र खोलकर कामदेव को भस्म कर दिया । व्यक्ति के शरीर में जो काम अर्थात् कामनाऐं हैं, वही विराट के शरीर में कामदेव के नाम से कहा गया है । पाँच बाण हमारी पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, जिनसे कामनाऐं उत्पन्न होती हैं । पाँचों इन्द्रियों को एकाग्र करके और मन में समाहित करके एकाग्र मन से शंकर अर्थात् न्यूट्रान (Nutron) का भेदन करना है तभी कामदेव (कामनाओं) का नाश होगा और मुक्ति मिलेगी ।

कुछ वाम मार्गी जो काम की ऊर्जा को ध्यान का साधन बनाते हैं वे कभी भी पूर्ण कुंडलनी जागरण अर्थात् मेरुपुच्छ से लेकर सहस्रार तक LASER का निर्माण करने में सफल नहीं हो सकते । वे कुछ चक्रों के भेदन तक ही सफलता पा सकते हैं, जिस कारण उनमें असाधारण ज्ञान एवम् वाक्पटुता का विकास हो जाता है, इस प्रकार की सफलता को हम गणेश और सरस्वती की शक्तियों की सिद्धि भर कह सकते हैं । *यह क्रिया एक दम अवैज्ञानिक है ।* कुंडलनी जागरण के फलस्वरूप शरीर से सभी प्रकार के रोगों की समाप्ति स्वाभाविक है । जो योगी रोगग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो, उसके सम्पूर्ण सिद्धयोगी होने में संदेह समझना चाहिए । शरीर के कुछ अपने धर्म और नियम होते हैं, उनका खण्डन करने से परम सिद्धि की प्राप्ति सम्भव नहीं है । **क्योंकि ब्रह्मचर्य के खण्डित होते ही विशाल चुम्बकीय विद्युत ऊर्जा (ओज एवम् तेज) का विसर्जन हो जाता है और सहस्रार (Cortex) तक कुंडलनी भेदन नहीं हो पाता और तब शक्ति का शिव (Nutron) से मिलन भी नहीं हो पाता, क्योंकि ऐसा होने पर ही योगी के प्राण ब्रह्म रंध्र से निकलते देखे गये हैं और तभी योगी को समाधी में करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाश का अनुभव होता है और परम आनन्द की अनुभूति भी । गीता में कहा है–**

न तद्भासयते सूर्यो न शशांङ्को न पावकः ।

यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ।। 15/6 गीता

ठीक ऐसा ही दृश्य हमारी आकाश गंगा में भी होना चाहिए । Electron अर्थात् जो विराट (ब्रह्म) की आवृत्ति करता हो ब्रह्मा कहलाता है, इसे रामचरित मानस में ब्रह्म की बुद्धि कहा है । एक समय अवश्य आता है, जब पूरी की पूरी आकाश गंगा का अवसान काल आ जाता है अर्थात् यह समापन काल कल्प कहलाता है, तब यही Electron फिर Nutron का भेदन करता है और Proton भी समाहित हो जाता है फिर सम्पूर्ण दृश्य प्रपंच नष्ट होकर प्रथम चुम्बकीय विद्युत तरंगों के रूप में और अन्त में परमतत्व में सन्निहित हो जाता है और परमात्मा जो अव्यक्त ही है उसे अपने में समाहित किए हुए सृष्टि की शान्त अवस्था का आनन्द लेता है । यह प्रक्रिया एक कल्प में पूरी होती है । इस समय ब्रह्मा के 100 वर्ष पूरे हो चुके होते हैं और ब्रह्मा की आयु के 100 वर्ष अर्थात् ब्राह्म वर्ष $31,10,40 \times 10^9$ (31 नील, 10 खरब, 40 अरब) मानव वर्ष के बराबर है ।

हरिः ॐ तत् सत् !

भवदीय

डा० अवधबिहारी लाल गुप्ता

बी–340, लोक विहार, पीतम पुरा,

दिल्ली–110034. फोन : 7184145

निवेदन :– पाठकों से निवेदन है कि अपने विचार अवश्य लिख कर भेजें, जिसके लिए लेखक आप सभी का अग्रिम धन्यवाद करता है ।

* सृजन की प्रक्रिया – एक परिकल्पना *

परमात्मा के गुण

1. चेतन शक्ति	सर्वव्यापक
2. आनन्द शक्ति	सर्वशक्तिमान
3. ज्ञानशक्ति	सर्वज्ञ, अजन्मा
4. इच्छा शक्ति	एकमात्र अनन्तसत्ता
5. क्रिया शक्ति	निर्गुण–निराकार

शक्ति (दुर्गा) के नौ रूप – एक कल्पना

1.	स्कन्दमाता	(Kinetic)
2.	शैलपुत्री	(Potential)
3.	कूष्माण्डा	(Chemical)
4.	सिद्धिदात्री	(Electricity)
5.	कात्यामनी	(Nuclear)
6.	कालरात्रि	(Thermal)
7.	ब्रह्मचारिणी	(Magnetic)
8.	चन्द्रघंटा	(Sound)
9.	महागौरी	(Light)

टिप्पणी:–

(1) परमात्मा के चित्ताकाश में सम्पूर्ण शक्ति चुम्बकीय विद्युत तरंगों के रूप में विद्यमान रहती है और उसी का प्रसार विश्व के रूप में हुआ है।

(2) Proton किसी भी योनि में देह धारण का कारण है। यह कार्य कोष्ठकों के विभाजन अर्थात् शतरूपा (Cell division) द्वारा पूर्ण होता है।

CREATION - DISSOLUTION CYCLE

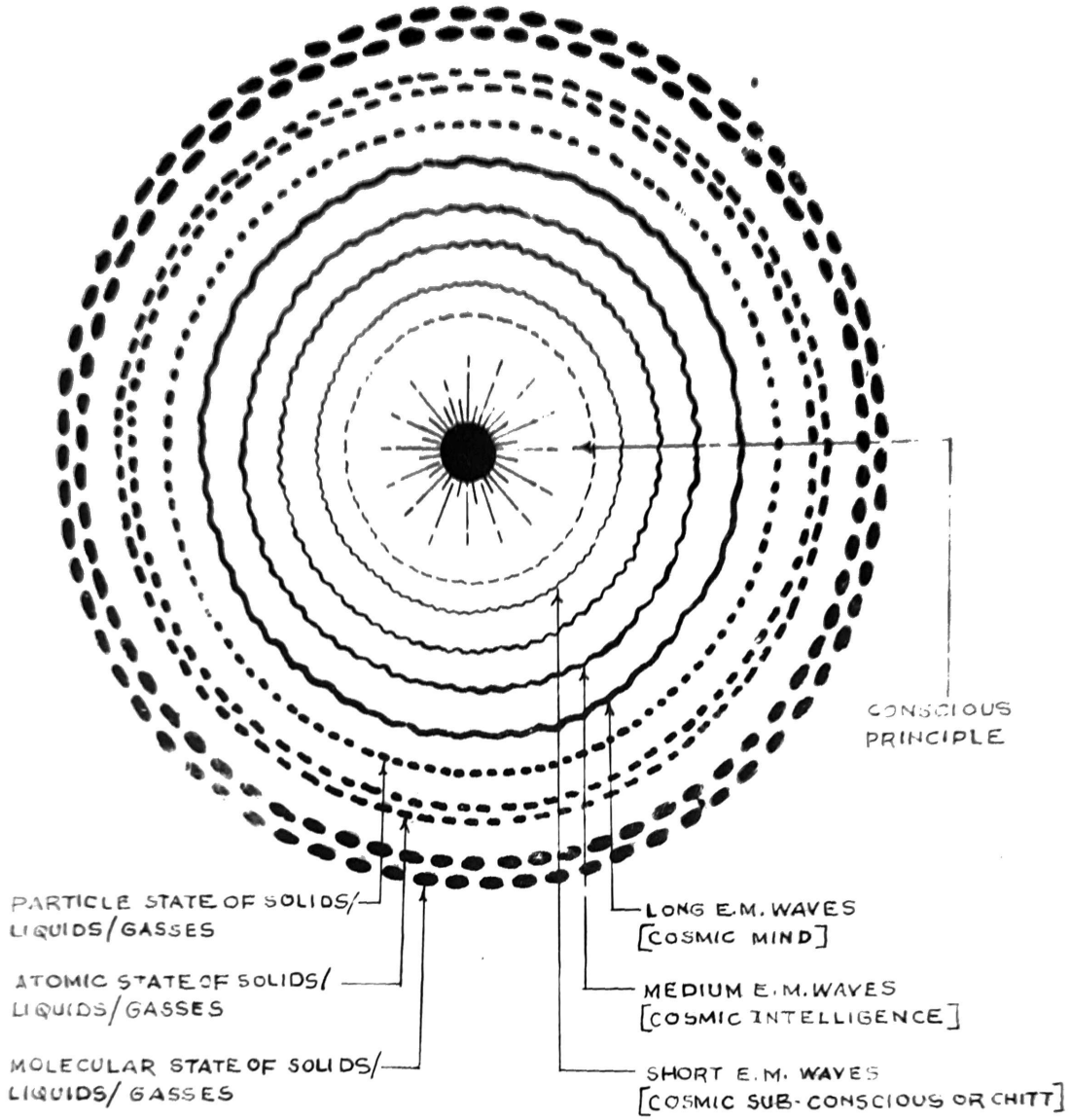

CREATION OF PARTICLES FROM ELECTRO MAGNETIC WAVES